VOL- IX | ISSUE- VI | JUNE | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

'नवल काका'— एक असहज बूढ़ा पिता

डॉ. किशोर पवार
प्रोफेसर
दहिवडी कॉलेज दहिवडी
त. माण जी. सातारा
महाराष्ट्र

प्रस्तावना —

रिश्ते प्राकृतिक पद्धति व भावनाओं से बनने की प्रक्रिया हम समाज में देखते हैं; न कि मानवीय समाज अपितु पशु, पक्षी व प्राणी समुदायों में भी। यही तो वह अपनापन होता है, जो हमें एक — दूसरे से, अपनों से जोड़े रखता है। जन्म से लेकर आगे प्राणी के विकास व वृद्धावस्था तथा अवसान पर यह भावना, नाता हमारी जीवन्तता को दर्शाता है। परिवार में वयस्कता आदर व आदर्श की परिचायक होती है। विशेषत: भारतीय परिवारों में यह संस्कार सहज है। परन्तु ग्रामजीवन का यह आदर्श, संस्कार, रिश्ते का अपनापन अब शहरों के आधुनिक वातावरण व नयी सोच - विचार की भेंट चढ़ गया है। मानवीय संबंधों में आयी इस असहज दरार को पाशविक कहना समुचित है।

गावों में मानवीय संबंधों की आज भी जहाँ आतुरता है, वहीं शहरों में रिश्तों की अनदेखी, अस्वीकृति व परान्मुखता चरम पर है; जो अवसरवादिता से आगे बढ़कर असहिष्णुता की चरम सीमा को लांघ गयी है। माता- पिता अपनी संतानों के भविष्य में अपना जीवन, अपनी खेती, अपना घर, अपनी सारी जमा पूंजी को खर्च किये देते हैं। तो बदले में वृद्धावस्था की स्थिति में अपनी ही संतानों से माता- पिता के प्रति हो रही अनदेखी अब क्रूरता से आगे गुज़री है। कमाऊँ संतानों की अपने माता- पिता को भूखों मरने को छोड़ जाने की असहजता किस समाज में स्वीकारणीय है ? और होगी ? श्याम जांगिड जी की **हंस** मार्च २०२१ में प्रकाशित कहानी **नवल काका** इसी की एक दास्ताँ है।

कहानीकार परिचय —श्याम जांगिड जी का जन्म ९ मई,१९४९ चुरू, राजस्थान में हुआ। वाणिज्य स्नातक तक उनकी शिक्षा हुयी है। उनका प्रकाशित साहित्य इस प्रकार है, **'हिंदी**— जुड़े हुए फासले, एकला चलो रे, कटा हुआ समय (कहानी संग्रह), प्रेम गली अति सांकरी, न होने का दर्द, उदास हथेलियाँ (उपन्यास), महाकाल की जटाओं में दस दिन (यात्रा वृत्तान्त), **राजस्थानी**— एक सती री आख़री परकमा (कहानी संग्रह), म्हारो अध्यक्षता कांड (व्यंग्य संग्रह), नोरंग जी री अमर कहानियाँ (उपन्यास), राजस्थानी री आधुनिक कहानियां (सम्पादन), डोगरी कथावां (सम्पादन केन्द्रीय साहित्य अकादेमी द्वारा)

संपर्क : पाणिनी कुटीर, डालमिया बॉयज स्कूल के पास, न्यू कालोनी, चिड़ावा — ३३३०२६ (राजस्थान)

शब्द संकेत - नवल काका ये कहानी के नायक हैं। जिन्होंने अपनी गरीबी में चौकीदार की नौकरी से दो बेटों को पढ़ा - लिखाकर बड़ा किया। वर्तमान में ऐसे कई माता- पिता नवल काका समान निरुपयोगी, असहजव विवश बन रहे हैं; इसमें कोई नवल नहीं है।

संशोधन पद्धति— प्रस्तुत **नवल काका** इस कहानी के अध्ययन में हमने शोध की विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया है। वर्तमान साहित्य में वृद्ध विमर्श केंद्र में है। इस दृष्टि से यह कहानी आलोचना का विषय निश्चित ही है। वृद्ध अवस्था की स्थिति, समस्याओं के आकलन एवं समाधान हेतु विश्लेषण का प्रयास है।

'नवल काका' कहानी का कथानक— **'नवल काका'** यह कहानी बदलते रिश्ते व परिवेश की कहानी है। इस कथा के नायक 'नवल काका' एक वृद्ध हैं। नवल काका अपने गाँव में प्राथमिक शिक्षा तक पढ़े हैं। जिन्हें उनके मित्र के पिताजी (जिन्हें वे बाबूजी कहते हैं) ने चौकीदार की नौकरी दिलवायी। नवल काका के पिता का देहांत हुआ था। घर में कोई कमाने वाला नहीं था। दादाजी के इस उपकार को वे भूले नहीं। वे दादाजी को पितृतुल्य मानते रहे। अपने बेटों की पढाई और अन्य मांगों के लिए उन्होंने गाँव का अपना सब कुछ बेच

दिया; जिसमें दो एकड़ का खेत, तीन पक्के कोठों वाला मकान रहा।

नवल काका संबंधों को बनाये रखने व निभाने वाले मिलनसार व्यक्ति हैं। गाँव में सम्बन्धियों के सुख-दुःख के समय सम्मिलित होते रहते हैं। गाँव के प्रति का मोह उन्हें शहर से खींच कर नित्य अपने गाँव लाता है। पर उनके बेटे एक बार गाँव से जाने पर वापस गाँव नहीं आये। बेटों ने शहर में अपने - अपने घर के लिए पिता की नाक में दम कर पिता को खेती व बाद में मकान बेचने पर विवश किया। अब काका अपने साधारण से फ्लैट में अकेले रहते हैं, जहाँ कभी वे पत्नी और बेटों के साथ रहते थे। बेटे नंदू और रतन को वही फ्लैट अब छोटा लगता है, अत: वे पिता से अलग रहते हैं। पत्नी न रही और बुढ़ापे में नवल काका अपने हाथों से खाना बनाकर अकेले व अभाव में रहने की अनावश्यक और असहज विडम्बना में जीवन बीता रहे हैं। बड़ा बेटा बदकार निकला, जो पिता को कुछ देता नहीं। छोटा बेटा हफ्ते – दस दिन में राशन दे जाता है, परन्तु अबकी पंद्रह दिन तक उसने कुछ दिया नहीं। उनकी पेंशन से बिजली व गैस का खर्च पूरा नहीं होता। अत: वे उपवास करने की स्थिति में विवश हैं।

'नवल काका' कहानी की समीक्षा - 'नवल काका' यह कहानी परम्परा से टूटते रिश्ते, बदलते परिवेश की एक झांकी दिखाती कहानी है। निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर हम कहानी की समीक्षा करेंगे।

१) घर पुरखों की धरोहर – गाँव में घर पारम्परिक और धरोहर रूप में होते हैं। घर व्यक्ति के बुढ़ापे का अधिकार वाला ठौर होता है। दादाजी ने समझाया था**"... कि नवलिया तूने खेत बेच दिया, अब घर मत बेच। घर रहेगा तो बुढ़ापे में आकर तुम दोनों धनी- लुगाई यहां रह लोगे। बावले, घर तो पुरखों की धरोहर है।"**२ परन्तु बेटों के आगे नवल काका को वह विवश होकर बेचना पड़ता है। बेटों के अपने घर बनने पर काका अपने शहर वाले घर में अकेले रहने पर विवश होते हैं। न पुरखों का घर रहा, न घर के काका रहे और न घर घर ही रहा। यह कैसी सजा बेटों को पढ़ा – लिखाकर योग्य बनाने की नवल काका को मिले ?

२) शहर के घर और गाँव में टिकने का अनठौर– कहानी के नवल काका का गाँव वाला पुश्तैनी मकान शहर में बेटों के घर की इच्छा हेतु भेंट चढ़ गया। अत: उन्हें शहर से गाँव आने पर अपने गाँव में टिकने – ठहरने का कोई ठिकाना नहीं रहा। यह स्थिति अब हमारे चारों ओर दिख रही है। कथा प्रस्तोता बन्ना शहर के नवल काका की इस स्थिति का परिचय देता है, **"...। वे जब भी गाँव आते हैं, हमारे यहाँ ही टिकते हैं। कई बरस हुए गाँव में उनका अपना कोई पुश्तैनी मकान नहीं रहा।"**३

३) एक और गाँव का अपना मकान दूसरे शहरी फ्लैट की स्थिति – परिवार के लिए शहर में आ बसे नवल काका का एक साधारण सा फ्लैट है। जिसकी स्थिति से अवगत होने पर बन्ना का सारा उत्साह ठंडा पड जाता है। **"उनका फ्लैट तीसरे माले पर था। यह चार तल्लो वाली पुरानी इमारत थी। लिफ्ट न होने के कारण मुझे जीना चढकर जाना पढ़ा। ऊपर पहुंचकर मैंने डोरबेल का बटन देखा, पर वहां कोई बटन नहीं था।...।...।...। फ्लैट के अन्दर एक अजीब सूनापन भरा था। बोदी और बेआब दीवारें। दो कमरों के इस फ्लैट में छोटा – सा पैसेज। जिस कमरे में वे मुझे ले गए, उसमें एक पुराना सिंगल बेड लगा था, जिस पर एक मैली – सी चादर बिछी थी। एक चिक्कट तकिया सिरहाने रखा हुआ। एक पाइप वाली कुर्सी जो एलास्टिक गायब होने पर निवाड से बुनी हुई थी।...।...। दीवार पर एक गोल घड़ी जिसमें ११ बजकर २० मिनट का समय था। यानी घड़ी बंद थी। खिड़की के शीशों में दो जगह गत्ते फंसाए हुए।"**४

४) समाधान की चाबी खोये अधिकार के अपने – अपने ताले– माता - पिता अपना सब कुछ संतानों पर न्योछावर कर देते हैं, किन्तु कुछ संतानें उन्हें सुविधापूर्ण और सम्मानजनक जीवन देने की अपेक्षा कष्टदायक व अपमानजनक स्थिति देते हैं। नवल काका ने अपना जीवन और सबकुछ बेटों के लिए खर्च किया, परन्तु वृद्धावस्था में बेटे उन्हें अपने हाल पर छोड़ देते हैं। अपनी जिम्मेदारी न निभाकर पिता के घर पर अपना अधिकार तालों के रूप में निश्चित कर देते हैं। **"दूसरे कमरे के बंद दरवाजे पर नजर गई। उसके कुंडे पर दो ताले लटक रहे थे। दोनों भाइयों के अपने - अपने ताले ... आपसी विग्रह, अपना हक़, बेसब्री और झंझट ..."**५ दोनों के अपने घर होकर भी दोनों के लगे ताले अपने अधिकार की जबरदस्ती दर्ज करते हैं, परन्तु अपने सुख के आगे वे अपने तथा पिता के समाधान की कुंजी छुपाये बैठे हैं। पैतृक संपत्ति पर अधिकार की भावना में

वे पिता के लिए जीवनयापन की कम से कम सामग्री देने का दायित्व मुकर जाते हैं।

५) **सुस्थित बेटे और राशन के लिए असहाय पिता**— दोनों सुस्थित बेटों के होते नवल काका को अपने लिए राशन की अनुपलब्धता है। उनकी विपन्न स्थिति की परवाह कोई करता नहीं। छोटा बेटा आठ दस दिन में उन्हें राशन दे जाता है पर अबके सप्ताह भर से नवल काका के पास राशन नहीं है। उधार भी तो कब तक चलेगा। **"... तुम कब तक आओगे ... एक हफ्ता हो गया ... मुझे अभी जरूरत है— अभी ! ... क्यों नहीं आ सकते ?... तुम तो ड्यूटी पर हो, पर यहाँ मेरा क्या हाल है तुम्हें पता है ! गाँव से बड़े बाबू का पोता आया हुआ है !... कुछ तो चाहिए... ऐसा करो घर पर मुन्ना होगा, उसके साथ भेज दो... हें ! ट्यूशन गया हुआ है...तो अब मैं क्या करूँ... अरे उसका पिछला उधर ही बाकी है।"६**

५) लापता पता और विज्ञापन — गाँव से शहर आने पर पते की समस्या बड़ी होती है। नवल काका शहर में रहते हैं। अत: बन्ना को इंटरव्यू के समय नवल काका का घर होने की सुविधा लगती है। उनके स्वभाव से बन्ना सहज विचार करता है कि उनके घर एक रात के लिए रुका जाय। वैसे दादाजी ने पते से नवल काका के घर की दूरी की सम्भावना सूचित की थी। बन्ना को काका का फ्लैट बड़ी मुश्किल से मिलता है। प्लाट नम्बर पर किसी ने विज्ञापन चिपका देने से बड़ी असुविधा हो गयी। घर से कंपनी का पता करवाने में टैक्सी को तीन सौ रुपये देने पड़े। यह पते के लापता वाली स्थिति काका के बेटों के लिए भी सार्थक है। संस्कारी बन्ना तीन सौ रुपये गवांकर पता ढूंढ लेता है तो काका के बेटे पते को लापता किये दे रहे हैं।

६) गाँव और शहरी वातावरण का अंतर— लोगों से कंपनी का पता काका पूछते थे पर कोई नहीं बताता था। कई लोग तो बिना सुने ही आगे बढ़ते गए। अंत में बन्ना को टैक्सी करनी पडी। **"एक — डेढ़ कि. मी. भटकने के बाद मैंने काका से कहा — ' ऐसे पार नहीं लगेगी काका... टैक्सी कर लेते हैं।"७** डेढ़ किलोमीटर में कोई पता न बताये तो ये शहर ही हो सकता है। गाँव वाले तो नए व्यक्ति से खुद ही बातें करते हैं। किसी नए व्यक्ति को रास्ता ही नहीं बताते अपितु उस स्थान तक पहुंचाते भी हैं। गाँव में काका सहजता से किसी के घर रह सकते थे परन्तु शहर में अपने ही बेटे न उन्हें अपने घर रखते हैं, न उनके साथ रहते हैं। शहर में हर कोई व्यस्त है, परन्तु गाँव में कितने ही काम हो, आपको समय देने की मानसिकता गाँव वालों में होती है। यह अंतर भी हम इस कहानी में देख सकते हैं।

७) **गले उतराई वाली मेहमाननवाजी** — बन्ना को नवल काका की आर्थिक स्थिति का परिचय अभी नहीं था। काका उसे एक कप चाय बनाकर ला देते हैं। वह प्रश्न करता है कि एक ही क्यों ? तब उसे काका बताते हैं कि उन्होंने अभी चाय पी है। उसे यह अजीब, अटपटा लगता है। **"यह तो गले उतराई वाली मेहमाननवाजी हुई ! काका तटस्थ बैठे थे और मैं चाय पी रहा था।"८** काका की स्थिति अनुभव कर दोपहर में और दूसरे दिन सुबह खाने की व्यवस्था बन्ना करता है। नाश्ते के समय काका की हंसी में अपनी असहायता पर खदबदाता आर्तनाद अनुभव होता है। उनकी आँखें गीली हो गयी थी। १०० — १५० ग्राम चावल उधार लाकर रात के खाने में काका ने दल चावल बनाई थी। लौटते समय बन्ना उन्हें कुछ रुपया देकर निकलने की सोचता है, परन्तु टैक्सी, बस, बर्गर और नाश्ते के खर्च बाद उसके पास उन्हें कुछ देने जितना पैसा नहीं बचा था। अपनी गहन वेदना को दबाकर बन्ना को उनसे विदा होना पड़ता है।

निष्कर्ष—

वृद्ध विमर्श पर लिखी जाती रही कहानियों में **नवल काका** यह कहानी एक अगली कड़ी है। प्राय: वृद्ध विमर्श ग्रामीण परिवेश पर होता रहा; जैसे प्रेमचंद जी की **बूढ़ी काकी**। यहाँ **नवल काका** ग्राम से शहर आकर अपनी सुस्थित संतानों से पीड़ित हैं। अपनी अशक्त आय से अपने बेटों पर आश्रित बन बैठे हैं। बेटे, बहुओं व पोतों के होते हुए भी वे अकेले रहने पर विवश हैं। इस पीड़ा व असहाय भावना को जैसे-तैसे स्वीकारे नवल काका तब भावुक हो विद्रोह की भूमिका में आते हैं, जब बड़े बाबू के पोते बन्ना का वे साधारण — सा आतिथ्य भी कर नहीं पाते; जिनके घर वे ठहरते हैं। गाँव में अपनी साख वाले नवल काका बन्ना का आतिथ्य किये बिना उसके ही द्वारा बर्गर व नाश्ते की स्वीकृति करने पर नत व लाचार हैं। अपने अधिकार को निरस्त कर चुके नवल काका अपने बेटे से परास्त हो; बन्ना की आवभगत न कर सकने की स्थिति पर भर्राते, रोते हैं। यह स्थिति परिवार व संबंधों की विदारक परिस्थिति को दर्शाती है। कहानीकार ने

नवल काका के प्रति बन्ना की गहन वेदना को परिस्थितिवश जब्त करता दिखाते हुए पाठकीय संवेदना को भरसक जगाया है। जीवन के आदर्श, संस्कार, रिश्ते, अपनापन, जिम्मेदारी अब शहरों के आधुनिक वातावरण व प्रभाववश अमानवीय बनते हुए असहज संबंधों में बदलते अनुभव हो रहे हैं। इस शहरी प्रभाव ने पिता को असहज बूढा और लाचार बना दिया है। अब काका पिता भी न रहे। गाँव में काका का न घर रहा, न शहर वाले घर में उनके साथ कोई रहता है। वृद्ध अवस्था की स्थिति, समस्याओं का आकलन तो हो सकता है पर समाधान हेतु कया किया जा सकता है; इसका कोई समाधान कैसे हो ? बदलते समय में मनुष्य के स्वार्थ और क्रूरता का विलय संवेदनाओं से ही संभव है। संवेदनाएं जगाने का काम साहित्य ही कर सकता है। पाठकों की इन्हीं संवेदनाओं को जगाने में यह कहानी सफल है।

सन्दर्भ :

१. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २५
२. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २६
३. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ - पृष्ठ २५
४. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २६
५. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २८
६. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २८
७. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २७
८. नवल काका – लेखक श्याम जांगिड. **हंस** मार्च २०२१ पृष्ठ २६

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com